

Para 2

Sipara 2 of 30 · 111 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Baqara

142

﴿ سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبَلَتِهِمْ الَّتِي كَانُوا ﴾ عَلَيْهَا ﴿ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ﴾ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ ﴿ مُسْتَقِيمٍ ﴾

बाज़ अहमक लोग ये कह बैठेंगे कि मुसलमान जिस क़िबले बैतुल मुक़द्दस की तरफ पहले से सज़दा करते थे उस से दूसरे क़िबले की तरफ मुड़ जाने का बाइस हुआ। ऐ रसूल तुम उनके जवाब में कहो कि पूरब पश्चिम सब खुदा का है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ हिदायत करता है

143

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً ﴿ وَسَطًا ﴾ لَتَكُونُوا ﴿ شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ﴾ ﴿ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ﴾ ﴿ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ﴾ ﴿ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ إِيْمَانَكُمْ ﴾ ﴿ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَّءُوفٌ ﴾ ﴿ رَحِيمٌ ﴾

और जिस तरह तुम्हारे क़िबले के बारे में हिदायत की उसी तरह तुम को आदिल उम्मत बनाया ताकि और लोगों के मुक़ाबले में तुम गवाह बनो और रसूल मोहम्मद तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बनें और (ऐ रसूल) जिस क़िबले की तरफ़ तुम पहले सज़दा करते थे हम ने उसको को सिर्फ़ इस वजह से क़िबला क़रार दिया था कि जब क़िबला बदला जाए तो हम उन लोगों को जो रसूल की पैरवी करते हैं हम उन लोगों से अलग देख लें जो उलटे पाव फिरते हैं अगरचे ये उलट फेर सिवा उन लोगों के जिन की खुदा ने हिदायत की है सब पर शाक़ ज़रूर है और खुदा ऐसा नहीं है कि तुम्हारे ईमान नमाज़ को जो बैतुलमुक़द्दस की तरफ पढ़ चुके हो बरबाद कर दे बेशक़ खुदा लोगों पर बड़ा ही रफ़ीक़ व मेहरबान है।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً ۚ تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا ۚ وَجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ

ऐ रसूल क़िबला बदलने के वास्ते बेशक तुम्हारा बार बार आसमान की तरफ मुँह करना हम देख रहे हैं तो हम ज़रूर तुम को ऐसे क़िबले की तरफ फेर देंगे कि तुम निहाल हो जाओ अच्छा तो नमाज़ ही में तुम मस्जिदे मोहतरम काबे की तरफ मुँह कर लो और ऐ मुसलमानों तुम जहाँ कहीं भी हो उसी की तरफ अपना मुँह कर लिया करो और जिन लोगों को किताब तौरित वगैरह दी गयी है वह बखूबी जानते हैं कि ये तबदील क़िबले बहुत बजा व दुरुस्त है और उस के परवरदिगार की तरफ से है और जो कुछ वह लोग करते हैं उस से खुदा बेखबर नहीं

وَلِئِنْ آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ ۚ مَا تَبِعُوا ۚ قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ ۚ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ ۚ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلِئِنْ أَتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ

और अगर अहले किताब के सामने दुनिया की सारी दलीले पेश कर दोगे तो भी वह तुम्हारे क़िबले को न मानेंगे और न तुम ही उनके क़िबले को मानने वाले हो और खुद अहले किताब भी एक दूसरे के क़िबले को नहीं मानते और जो इल्म कुरान तुम्हारे पास आ चुका है उसके बाद भी अगर तुम उनकी ख्वाहिश पर चले तो अलबत्ता तुम नाफ़रमान हो जाओगे

الَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ ۚ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّ فَرِيقًا ۚ مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

जिन लोगों को हमने किताब (तौरित वगैरह) दी है वह जिस तरह अपने बेटों को पहचानते है उसी तरह तरह वह उस पैग़म्बर को भी पहचानते हैं और उन में कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो दीदए व दानिस्ता (जान बुझकर) हक़ बात को छिपाते हैं

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

ऐ रसूल तबदीले क़िबला तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ है पस तुम कहीं शक करने वालों में से न हो जाना

وَلِكُلٍّ ۖ وَجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّیْهَا ۚ فَاسْتَبِقُوا ۚ الْخَيْرَاتِ ۚ اَیْنَ مَا تَكُونُوا ۚ یَأْتِ بِكُمْ اَللّٰهُ جَمِیْعًا ۚ اِنَّ اَللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۚ

और हर फरीक के वास्ते एक सिम्त है उसी की तरफ वह नमाज़ में अपना मुँह कर लेता है पस तुम ऐ मुसलमानों झगड़े को छोड़ दो और नेकियों मे उन से लपक के आगे बढ़ जाओ तुम जहाँ कहीं होंगे खुदा तुम सबको अपनी तरफ ले आएगा बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَانِّهٗ ۚ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا اَللّٰهُ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम जहाँ से जाओ (यहाँ तक मक्का से) तो भी नमाज़ मे तुम अपना मुँह मस्जिदे मोहतरम (काबा) की तरफ़ कर लिया करो और बेशक ये नया क़िबला तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ है

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا ۚ وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ لِئَلَّا یَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَیْكُمْ حُجَّةٌ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوا ۚ مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاَخْشَوْنِیْ وَلَآ تَمَّ نِعْمَتِیْ عَلَیْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

और तुम्हारे कामों से खुदा ग़ाफिल नहीं है और (ऐ रसूल) तुम जहाँ से जाओ (यहाँ तक के मक्का से तो भी) तुम (नमाज़ में) अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लिया करो और (ऐ रसूल) तुम जहाँ कहीं हुआ करो तो नमाज़ में अपना मुँह उसी काबा की तरफ़ कर लिया करो (बार बार हुक्म देने का एक फायदा ये है ताकि लोगों का इल्ज़ाम तुम पर न आने पाए मगर उन में से जो लोग नाहक़ हठधर्मी करते हैं वह तो ज़रूर इल्ज़ाम देंगे) तो तुम लोग उनसे डरो नहीं और सिर्फ़ मुझसे डरो और (दूसरा फ़ायदा ये है) ताकि तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ

كَمَا اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا ۙ اِنْ مِنْكُمْ یَتْلُوْا ۚ عَلَیْكُمْ ءَاٰیٰتِنَا وَیُزَكِّیْكُمْ وَیُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَیُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوْا ۚ تَعْلَمُوْنَ

और तीसरा फायदा ये है ताकि तुम हिदायत पाओ मुसलमानों ये एहसान भी वैसा ही है जैसे हम ने तुम में तुम ही में का एक रसूल भेजा जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए और तुम्हारे नफ्स को पाकीज़ा करे और तुम्हें किताब कुरान और अक्ल की बातें सिखाए और तुम को वह बातें बताए जिन की तुम्हें पहले से खबर भी न थी

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونَ

पस तुम हमारी याद रखो तो मै भी तुम्हारा ज़िक्र (खैर) किया करुगाँ और मेरा शुक्रिया अदा करते रहो और नाशुक्री न करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

ऐ ईमानदारों मुसीबत के वक्त सब्र और नमाज़ के ज़रिए से खुदा की मदद माँगों बेशक खुदा सब्र करने वालों ही का साथी है

وَلَا تَقُولُوا ۖ لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُمُوتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ ۚ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ

और जो लोग खुदा की राह में मारे गए उन्हें कभी मुर्दा न कहना बल्कि वह लोग ज़िन्दा हैं मगर तुम उनकी ज़िन्दगी की हकीकत का कुछ भी शऊर नहीं रखते

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ ۖ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ ۖ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۚ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ

और हम तुम्हें कुछ खौफ और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से ज़रूर आजमाएंगे और (ऐ रसूल) ऐसे सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दो

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا ۖ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो वह (बेसाख्ता) बोल उठे हम तो खुदा ही के हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं

أُو۟لَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ ۖ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ

उन्हीं लोगों पर उनके परवरदिगार की तरफ से इनायतें हैं और रहमत और यही लोग हिदायत याफ़्ता है

﴿۱﴾ إِنَّ الصَّافَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ﴿۲﴾ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ﴿۳﴾ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرٌ ﴿۴﴾ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ

बेशक (कोहे) सफ़ा और (कोह) मरवा खुदा की निशानियों में से हैं पस जो शख्स खानए काबा का हज या उमरा करे उस पर उन दोनो के (दरमियान) तवाफ़ (आमद ओ रफ्त) करने में कुछ गुनाह नहीं (बल्कि सवाब है) और जो शख्स खुश खुश नेक काम करे तो फिर खुदा भी क़दरदाँ (और) वाकिफ़कार है

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ ﴿۱﴾ بَعْدَ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ﴿۲﴾ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ

बेशक जो लोग हमारी इन रौशन दलीलों और हिदायतों को जिन्हें हमने नाज़िल किया उसके बाद छिपाते हैं जबकि हम किताब तौरैत में लोगों के सामने साफ़ साफ़ बयान कर चुके हैं तो यही लोग हैं जिन पर खुदा भी लानत करता है और लानत करने वाले भी लानत करते हैं

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ﴿۱﴾ وَأَصْلَحُوا ﴿۲﴾ وَبَيَّنُّوا ﴿۳﴾ فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ﴿۴﴾ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

मगर जिन लोगों ने (हक़ छिपाने से) तौबा की और अपनी खराबी की इसलाह कर ली और जो किताबे खुदा में है साफ़ साफ़ बयान कर दिया पस उन की तौबा मैं कुबूल करता हूँ और मैं तो बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान हूँ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿۱﴾ وَمَاتُوا ﴿۲﴾ وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़ एख्तेयार किया और कुफ़ ही की हालत में मर गए उन्ही पर खुदा की और फरिश्तों की और तमाम लोगों की लानत है हमेशा उसी फटकार में रहेंगे

خُلِدِينَ فِيهَا ﴿۱﴾ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

न तो उनके अज़ाब ही में तरफ़ीफ़ (कमी) की जाएगी

وَالْهُكْمُ لِلَّهِ ۚ وَحَدُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

और न उनको अज़ाब से मोहलत दी जाएगी और तुम्हारा माबूद तो वही यकता खुदा है उस के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ ۚ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

बेशक आसमान व ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के रहो बदल में और क़श्तियों जहाज़ों में जो लोगों के नफे की चीज़े (माले तित्जारत वगैरह दरिया) में ले कर चलते हैं और पानी में जो खुदा ने आसमान से बरसाया फिर उस से ज़मीन को मुर्दा (बेकार) होने के बाद जिला दिया (शादाब कर दिया) और उस में हर क़िस्म के जानवर फैला दिये और हवाओं के चलाने में और अब्र में जो आसमान व ज़मीन के दरमियान खुदा के हुक्म से घिरा रहता है (इन सब बातों में) अक्ल वालों के लिए बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا ۚ يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَشَدُّ حُبًّا ۚ لِلَّهِ ۚ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो खुदा के सिवा औरों को भी खुदा का मिसल व शरीक बनाते हैं (और) जैसी मोहब्बत खुदा से रखनी चाहिए वैसी ही उन से रखते हैं और जो लोग ईमानदार हैं वह उन से कहीं बढ़ कर खुदा की उलफ़त रखते हैं और काश ज़ालिमों को (इस वक्त) वह बात सूझती जो अज़ाब देखने के बाद सूझेगी कि यक़ीनन हर तरह की कूवत खुदा ही को है और ये कि बेशक खुदा बड़ा सख्त अज़ाब वाला है

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا ۚ مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا ۚ وَرَأَوْا ۚ الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ

(वह क्या सख्त वक्त होगा) जब पेशवा लोग अपने पैरवो से अपना पीछा छुड़ाएंगे और (ब चश्मे खुद) अज़ाब को देखेंगे और उनके बाहमी ताल्लुक़ात टूट जाएँगे

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا ۖ لَوْ أَنَّنَا كَرَّةً ۖ فَنتَّبِرًا مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا ۖ مِنَّا ۖ كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَلَهُمْ حَسْرَتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخُرْجِينَ مِنَ النَّارِ

और पैरव कहने लगेंगे कि अगर हमें कहीं फिर (दुनिया में) पलटना मिले तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जायेंगे जिस तरह ऐन वक्त पर ये लोग हम से अलग हो गए यूँ ही खुदा उन के आमाल को दिखाएगा जो उन्हें (सर तापा पास ही) पास दिखाई देंगे और फिर भला कब वह दोज़ख से निकल सकते हैं

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَّالًا طَيِّبًا ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

ऐ लोगों जो कुछ ज़मीन में हैं उस में से हलाल व पाकीज़ा चीज़ (शौक से) खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तो तुम्हारा ज़ाहिर व ज़ाहिर दुश्मन है

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا ۖ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

वह तो तुम्हें बुराई और बदकारी ही का हुक्म करेगा और ये चाहेगा कि तुम बे जाने बूझे खुदा पर बोहतान बाँधों

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا ۖ مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا ۖ بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ ءَابَاءَنَا ۖ أَوَلَوْ كَانِ ءَابَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا ۖ وَلَا يَهْتَدُونَ

और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म खुदा की तरफ से नाज़िल हुआ है उस को मानो तो कहते हैं कि नहीं बल्कि हम तो उसी तरीके पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी न समझते हों और न राहे रास्त ही पर चलते रहे हों

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً ۖ وَنِدَاءً ۖ صُمٌّ ۖ بِكُمْ عُمَىٰ ۖ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

और जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया उन की मिसाल तो उस शख्स की मिसाल है जो ऐसे जानवर को पुकार के अपना हलक़ फाड़े जो आवाज़ और पुकार के सिवा सुनता (समझता खाक) न हो ये लोग बहरे गूँगे अन्धे हैं कि खाक नहीं समझते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُلُوا ۚ مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَأَشْكُرُوا ۚ لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ

ऐ ईमानदारों जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से सुथरी चीज़ें (शौक़ से) खाओं और अगर खुदा ही की इबादत करते हो तो उसी का शुक्र करो

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ ۚ لِغَيْرِ اللَّهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ ۚ وَلَا عَادٍ ۚ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

उसने तो तुम पर बस मुर्दा जानवर और खून और सूअर का गोشت और वह जानवर जिस पर ज़बह के वक्त खुदा के सिवा और किसी का नाम लिया गया हो हुराम किया है पस जो शख्स मजबूर हो और सरकशी करने वाला और ज्यादती करने वाला न हो (और उनमे से कोई चीज़ खा ले) तो उसपर गुनाह नहीं है बेशक खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنْ الْكِتَابِ وَيَشْتُرُونَ بِهِ ۚ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ أَوْ لِيُكْفُوا ۚ لِيُكْفُوا ۚ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

बेशक जो लोग इन बातों को जो खुदा ने किताब में नाज़िल की है छिपाते हैं और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत (दुनियावी नफ़ा) ले लेते हैं ये लोग बस अंगारों से अपने पेट भरते हैं और क़यामत के दिन खुदा उन से बात तक तो करेगा नहीं और न उन्हें (गुनाहों से) पाक करेगा और उन्हीं के लिए दर्दनाक अज़ाब है

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا ۚ الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ

यही लोग वह हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख्शिय (खुदा) के बदले अज़ाब पस वह लोग दोज़ख की आग के क्योंकर बरदाश्त करेंगे

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا ۚ فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ ۚ

بَعِيدٌ ۚ

ये इसलिए कि खुदा ने बरहक़ किताब नाज़िल की और बेशक जिन लोगों ने किताबे खुदा में रहो बदल की वह लोग बड़े पल्ले दरजे की मुखालेफत में हैं

ۚ لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُّوا ۚ وَجُوهَكُمْ قَبْلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّ ۚ نَ وَءَاتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ۚ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَءَاتَى الزَّكَاةَ وَالْمُؤْفُونَ بَعْدَهُمْ إِذَا عَاهَدُوا ۚ ۚ وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۚ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

नेकी कुछ यही थोड़ी है कि नमाज़ में अपने मुँह पूरब या पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी तो उसकी है जो खुदा और रोज़े आखिरत और फ़रिशतों और खुदा की किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और उसकी उलफ़त में अपना माल कराबत दारों और यतीमों और मोहताजों और परदेसियों और माँगने वालों और लौन्डी गुलाम (के गुलू खलासी) में सर्फ़ करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात देता रहे और जब कोई एहद किया तो अपने क़ौल के पूरे हो और फ़क़ व फाक़ा रन्ज और घुटन के वक्त साबित क़दम रहे यही लोग वह हैं जो दावए ईमान में सच्चे निकले और यही लोग परहेज़गार हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ ۚ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنثَىٰ بِالْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ ۚ فَاتَّبَاعُ ۚ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَنٍ ۚ ۚ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۚ ۚ فَمَنْ أَعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ ۚ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

ऐ मोमिनों जो लोग (नाहक़) मार डाले जाएँ उनके बदले में तुम को जान के बदले जान लेने का हुक्म दिया जाता है आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत पस जिस (क़ातिल) को उसके ईमानी भाई तालिबे केसास की तरफ़ से कुछ माफ़ कर दिया जाये तो उसे भी उसके क़दम ब क़दम नेकी करना और खुश मआमलती से (खून बहा) अदा कर देना चाहिए ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ आसानी और मेहरबानी है फिर उसके बाद जो ज्यादती करे तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ ۚ يَٰٓأَوَّلِيَّ الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

और ऐ अकलमनदों क़सास (के क़वाएद मुक़रर कर देने) में तुम्हारी ज़िन्दगी है (और इसीलिए जारी किया गया है ताकि तुम ख़ूरेज़ी से) परहेज़ करो

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَلَدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ

(मुसलमानों) तुम को हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो बशर्ते कि वह कुछ माल छोड़ जाएं तो माँ बाप और क़राबतदारों के लिए अच्छी वसीयत करें जो खुदा से डरते हैं उन पर ये एक हक़ है

فَمَنْ ۖ بَدَّلَهُ ۚ بَعْدَمَا سَمِعَهُ ۚ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ ۚ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ۚ

फिर जो सुन चुका उसके बाद उसे कुछ का कुछ कर दे तो उस का गुनाह उन्हीं लोगों की गरदन पर है जो उसे बदल डालें बेशक खुदा सब कुछ जानता और सुनता है

فَمَنْ خَافَ مِنْ مَوْصٍ ۚ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا ۚ فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

(हाँ अलबत्ता) जो शख्स वसीयत करने वाले से बेजा तरफ़दारी या बे इन्साफी का खौफ़ रखता है और उन वारिसों में सुलह करा दे तो उस पर बदलने का कुछ गुनाह नहीं है बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ

ऐ ईमानदारों रोज़ा रखना जिस तरह तुम से पहले के लोगों पर फर्ज था उसी तरफ़ तुम पर भी फर्ज किया गया ताकि तुम उस की वजह से बहुत से गुनाहों से बचो

أَيَّامًا مَّعْدُودَتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ ۖ فَعِدَّةٌ ۚ مِنْ أَيَّامٍ
 أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ ۖ فِدْيَةٌ ۖ طَعَامُ مَسْكِينٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۖ فَهُوَ
 خَيْرٌ ۚ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا ۖ خَيْرٌ ۚ لَكُمْ ۚ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(वह भी हमेशा नहीं बल्कि) गिनती के चन्द रोज़ इस पर भी (रोज़े के दिनों में) जो शख्स तुम में से बीमार हो या सफ़र में हो तो और दिनों में जितने क़ज़ा हुए हो) गिन के रख ले और जिन्हें रोज़ा रखने की क़वत है और न रखें तो उन पर उस का बदला एक मोहताज़ को खाना खिला देना है और जो शख्स अपनी खुशी से भलाई करे तो ये उस के लिए ज़्यादा बेहतर है और अगर तुम समझदार हो तो (समझ लो कि फ़िदये से) रोज़ा रखना तुम्हारे हक़ में बहरहाल अच्छा है

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى ۖ لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ ۚ مِنْ الْهُدَى
 وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۚ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ ۖ
 فَعِدَّةٌ ۚ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا ۖ الْعِدَّةَ
 وَلِتُكَبِّرُوا ۖ اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

(रोज़ों का) महीना रमज़ान है जिस में क़ुरान नाज़िल किया गया जो लोगों का रहनुमा है और उसमें रहनुमाई और (हक़ व बातिल के) तमीज़ की रौशन निशानियाँ हैं (मुसलमानों) तुम में से जो शख्स इस महीने में अपनी जगह पर हो तो उसको चाहिए कि रोज़ा रखे और जो शख्स बीमार हो या फिर सफ़र में हो तो और दिनों में रोज़े की गिनती पूरी करे खुदा तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख्ती करनी नहीं चाहता और (शुमार का हुक्म इस लिए दिया है) ताकि तुम (रोज़ों की) गिनती पूरी करो और ताकि खुदा ने जो तुम को राह पर लगा दिया है उस नेअमत पर उस की बड़ाई करो और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۚ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۚ
 فَلْيَسْتَجِيبُوا ۖ لِي وَلْيُؤْمِنُوا ۖ بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

(ऐ रसूल) जब मेरे बन्दे मेरा हाल तुमसे पूछे तो (कह दो कि) मैं उन के पास ही हूँ और जब मुझसे कोई दुआ माँगता है तो मैं हर दुआ करने वालों की दुआ (सुन लेता हूँ और जो मुनासिब हो तो) कुबूल करता हूँ पस उन्हें चाहिए कि मेरा भी कहना माने) और मुझ पर ईमान लाएँ

أَحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ ۚ لَهُنَّ ۚ
 عِلْمُ اللَّهِ أَنْكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالَّذِينَ بَشَرُوا هُنَّ
 وَأَبْتَغُوا ۚ مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا ۚ وَاشْرَبُوا ۚ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ
 مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۚ ثُمَّ أَتُمُوا ۚ الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَشِّرُوهُنَّ
 وَأَنْتُمْ عَكْفُونَ فِي الْمَسْجِدِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ ءَايَتِهِ ۚ
 لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

ताकि वह सीधी राह पर आ जाए (मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना हलाल कर दिया गया औरतें (गोया) तुम्हारी चोली हैं और तुम (गोया उन के दामन हो) खुदा ने देखा कि तुम (गुनाह) करके अपना नुकसान करते (कि आँख बचा के अपनी बीबी के पास चले जाते थे) तो उसने तुम्हारी तौबा कुबूल की और तुम्हारी ख़ता से दर गुज़र किया पस तुम अब उनसे हम बिस्तरी करो और (औलाद) जो कुछ खुदा ने तुम्हारे लिए (तक़दीर में) लिख दिया है उसे माँगों और खाओ और पियो यहाँ तक कि सुबह की सफ़ेद धारी (रात की) काली धारी से आसमान पर पूरब की तरफ़ तक तुम्हें साफ़ नज़र आने लगे फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और हाँ जब तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ करने बैठो तो उन से (रात को भी) हम बिस्तरी न करो ये खुदा की (मुअय्युन की हुई) हदे हैं तो तुम उनके पास भी न जाना यूँ खुल्लम खुल्ला खुदा अपने एहक़ाम लोगों के सामने बयान करता है ताकि वह लोग (नाफ़रमानी से) बचें

وَلَا تَأْكُلُوا ۚ أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبُطْلِ وَتُدْثُوا ۚ بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا ۚ فَرِيقًا ۚ مِّنْ
 أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न माल को (रिश्वत में) हुक्काम के यहाँ झोंक दो ताकि लोगों के माल में से (जो) कुछ हाथ लगे नाहक़ खुर्द बुर्द कर जाओ हालाकि तुम जानते हो

ۚ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِ ۚ قُلْ هِيَ مَوْقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجُّ ۚ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا ۚ
 الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اتَّقَى ۚ وَأَتُوا ۚ الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا ۚ
 اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

(ऐ रसूल) तुम से लोग चाँद के बारे में पूछते हैं (कि क्यो घटता बढ़ता है) तुम कह दो कि उससे लोगों के (दुनियावी) अम्र और हज़ के अवकात मालूम होते हैं और ये कोई भली बात नहीं है कि घरों में पिछवाड़े से फाँद के) आओ बल्कि नेकी उसकी है जो परहेज़गारी करे और घरों में आना हो तो) उनके दरवाज़ों की तरफ से आओ और खुदा से डरते रहो ताकि तुम मुराद को पहुँचो

وَقَتِّلُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَقْتُلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ

और जो लोग तुम से लड़े तुम (भी) खुदा की राह में उनसे लड़ो और ज्यादाती न करो (क्योंकि) खुदा ज्यादाती करने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۚ فَإِنْ قَتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۚ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ

और तुम उन (मुशरिकों) को जहाँ पाओ मार ही डालो और उन लोगों ने जहाँ (मक्का) से तुम्हें शहर बदर किया है तुम भी उन्हें निकाल बाहर करो और फितना परदाज़ी (शिरक) खूरज़ी से भी बढ़ के है और जब तक वह लोग (कुफ़ार) मस्जिद हराम (काबा) के पास तुम से न लड़े तुम भी उन से उस जगह न लड़ों पस अगर वह तुम से लड़े तो बेखटके तुम भी उन को क़त्ल करो काफ़िरों की यही सज़ा है

فَإِنْ أَنْتَهَوْا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

फिर अगर वह लोग बाज़ रहें तो बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَقَتِّلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ ۚ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أَنْتَهَوْا ۚ فَلَا عُدُونِ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ

और उन से लड़े जाओ यहाँ तक कि फ़साद बाक़ी न रहे और सिर्फ़ खुदा ही का दीन रह जाए फिर अगर वह लोग बाज़ रहे तो उन पर ज्यादाती न करो क्योंकि ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज्यादाती (अच्छी) नहीं

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قِصَاصٌ ۚ ۚ فَمَنْ أَعْتَدَى عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوا ۚ عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا أَعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ مَعَ
الْمُتَّقِينَ

हरमत वाला महीना हरमत वाले महीने के बराबर है (और कुछ महीने की खुसूसियत नहीं) सब हरमत वाली चीजे एक दूसरे के बराबर हैं पस जो शख्स तुम पर ज्यादाती करे तो जैसी ज्यादाती उसने तुम पर की है वैसी ही ज्यादाती तुम भी उस पर करो और खुदा से डरते रहो और खूब समझ लो कि खुदा परहेज़गारों का साथी है

وَأَنفِقُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَأَحْسِنُوا ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

और खुदा की राह में खर्च करो और अपने हाथ जान हलाकत मे न डालो और नेकी करो बेशक खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है

وَاتِمُوا ۚ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا
تَحْلِقُوا ۚ رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ ۚ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ
أَذًى ۚ مِّن رَّأْسِهِ ۚ فَفِدْيَةٌ ۚ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ ۚ فَإِذَا أُمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ
بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامٌ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ فِي
الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۚ تِلْكَ عَشْرَةٌ ۚ كَامِلَةٌ ۚ ۚ ذَلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ ۚ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

और सिर्फ खुदा ही के वास्ते हज और उमरा को पूरा करो अगर तुम बीमारी वगैरह की वजह से मजबूर हो जाओ तो फिर जैसी कुरबानी मयस्सर आये (कर दो) और जब तक कुरबानी अपनी जगह पर न पहुँच जाये अपने सर न मुँडवाओ फिर जब तुम में से कोई बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो (सर मुँडवाने का बदला) रोजे या खैरात या कुरबानी है पस जब मुतमइन रहों तो जो शख्स हज तमतो का उमरा करे तो उसको जो कुरबानी मयस्सर आये करनी होगी और जिस से कुरबानी ना मुमकिन हो तो तीन रोजे ज़माना ए हज में (रखने होंगे) और सात रोजे जब तुम वापस आओ ये पूरा दहाई है ये हुक्म उस शख्स के वास्ते है जिस के लड़के बाले मस्जिदुल हराम (मक्का) के बाशिन्दे न हो और खुदा से डरो और समझ लो कि खुदा बड़ा सख्त अज़ाब वाला है

الْحَجُّ أَشْهُرٌ ۖ مَّعْلُومَةٌ ۚ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ
فِي الْحَجِّ ۚ وَمَا تَفَعَّلُوا ۚ مِنْ خَيْرٍ ۚ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۚ وَتَزَوَّدُوا ۚ فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
التَّقْوَى ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ

हज के महीने तो (अब सब को) मालूम हैं (शव्वाल, ज़ीकादा, ज़िलहज) पस जो शख्स उन महीनों में अपने ऊपर हज लाज़िम करे तो (एहराम से आखिर हज तक) न औरत के पास जाए न कोई और गुनाह करे और न झगड़े और नेकी का कोई सा काम भी करे तो खुदा उस को खूब जानता है और (रास्ते के लिए) ज़ाद राह मुहिब्या करो और सब मे बेहतर ज़ाद राह परहेज़गारी है और ऐ अक्लमन्दों मुझ से डरते रहो

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا ۚ فَضْلًا ۚ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ ۚ
فَاذْكُرُوا ۚ اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۚ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ ۚ
لَمَنِ الضَّالِّينَ

इस में कोई इल्ज़ाम नहीं है कि (हज के साथ) तुम अपने परवरदिगार के फज़ल (नफ़ा तिजारत) की ख्वाहिश करो और फिर जब तुम अरफात से चल खड़े हो तो मशअरूल हराम के पास खुदा का जिक्र करो और उस की याद भी करो तो जिस तरह तुम्हे बताया है अगरचे तुम इसके पहले तो गुमराहो से थे

ثُمَّ أَفِيضُوا ۚ مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ ۚ وَأَسْتَغْفِرُوا ۚ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

फिर जहाँ से लोग चल खड़े हों वहीं से तुम भी चल खड़े हो और उससे मग़फ़िरत की दुआ माँगों बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَسِكَكُمْ فَادْكُرُوا ۚ اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ ءَابَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۚ ۚ ۚ فَمِنْ
النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا ءَاتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ ۚ فِي آخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۚ

फिर जब तुम अरक़ाने हज बजा ला चुको तो तुम इस तरह ज़िक्र ख़ुदा करो जिस तरह तुम अपने बाप दादाओं का ज़िक्र करते हो बल्कि उससे बढ़ कर के फिर बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ मेरे परवरदिगार हमको जो (देना है) दुनिया ही में दे दे हालांकि (फिर) आखिरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً ۖ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

और बाज़ बन्दे ऐसे हैं कि जो दुआ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले मुझे दुनिया में नेअमत दे और आखिरत में सवाब दे और दोज़ख की बाग से बचा

أَوْ لَكَ لَهُمْ نَصِيبٌ ۖ مِّمَّا كَسَبُوا ۖ ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

यही वह लोग हैं जिनके लिए अपनी कमाई का हिस्सा चैन है

ۚ وَادْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَتٍ ۚ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۚ وَآتَقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

और खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (निस्फ़) और इन गिनती के चन्द दिनों तक (तो) खुदा का ज़िक्र करो फिर जो शख्स जल्दी कर बैठे और (मिना) से और दो ही दिन में चल खड़ा हो तो उस पर भी गुनाह नहीं है और जो (तीसरे दिन तक) ठहरा रहे उस पर भी कुछ गुनाह नहीं लेकिन यह रियायत उसके वास्ते है जो परहेज़गार हो, और खुदा से डरते रहो और यक़ीन जानो कि एक दिन तुम सब के सब उसकी तरफ़ क़ब्रों से उठाए जाओगे

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ ۚ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۚ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ

ऐ रसूल बाज़ लोग मुनाफ़िक़ीन से ऐसे भी हैं जिनकी चिकनी चुपड़ी बातें (इस ज़रा सी) दुनियावी ज़िन्दगी में तुम्हें बहुत भाती है और वह अपनी दिली मोहब्बत पर खुदा को गवाह मुक़रर करते हैं हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मनों में सबसे ज्यादा झगड़ालू हैं

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ

और जहाँ तुम्हारी मोहब्बत से मुँह फेरा तो इधर उधर दौड़ धूप करने लगा ताकि मुल्क में फ़साद फैलाए और ज़राअत (खेती बाड़ी) और मवेशी का सत्यानास करे और खुदा फ़साद को अच्छा नहीं समझता

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ ۖ فَحَسْبُهُ ۖ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ

और जब कहा जाता है कि खुदा से डरो तो उसे गुरुर गुनाह पर उभारता है बस ऐसे कम्बख्त के लिए जहन्नुम ही काफ़ी है और बहुत ही बुरा ठिकाना है

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ رَءُوفٌ ۚ بِالْعِبَادِ

और लोगों में से खुदा के बन्दे कुछ ऐसे हैं जो खुदा की (खुशनूदी) हासिल करने की गरज़ से अपनी जान तक बेच डालते हैं और खुदा ऐसे बन्दों पर बड़ा ही यत्नकृत वाला है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ ادْخُلُوا ۖ فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا ۖ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ ۖ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ

ईमान वालों तुम सबके सब एक बार इस्लाम में (पूरी तरह) दाखिल हो जाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तुम्हारा यक़ीनी ज़ाहिर ब ज़ाहिर दुश्मन है

فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْ ۖ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

फिर जब तुम्हारे पास रौशन दलीले आ चुकी उसके बाद भी डगमगा गए तो अच्छी तरह समझ लो कि खुदा (हर तरह) ग़ालिब और तदबीर वाला है

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ ۖ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

क्या वह लोग इसी के मुन्तज़िर हैं कि सफेद बादल के साय बानो की आड़ में अज़ाबे खुदा और अज़ाब के फ़रिश्ते उन पर ही आ जाए और सब झगड़े चुक ही जाते हलॉकि आखिर कुल उमुर खुदा ही की तरफ रुजू किए जाएंगे

سَلِّ بَنِي إِسْرَءِيلَ كَمَا ءَاتَيْنَهُمْ مِّنْ ءَايَةٍ ۖ بَيِّنَةٍ ۚ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن ۖ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

(ऐ रसूल) बनी इसराइल से पूछो कि हम ने उन को कैसी कैसी रौशन निशानियाँ दी और जब किसी शख्स के पास खुदा की नेअमत (किताब) आ चुकी उस के बाद भी उस को बदल डाले तो बेशक़ खुदा सख्त अज़ाब वाला है

زَيْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ
فُوقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

जिन लोगों ने कुफ्र इस्तेयार किया उन के लिये दुनिया की ज़रा सी ज़िन्दगी खूब अच्छी दिखायी गयी है और ईमानदारों से मसखरापन करते हैं हालाँकि क़यामत के दिन परहेज़गारों का दरजा उनसे (कहीं) बढ़ चढ़ के होगा और खुदा जिस को चाहता है बे हिसाब रोज़ी अता फरमाता है

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً ۚ وَحِدَةً ۚ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيَّ ۚ نَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اُخْتَلَفُوا ۚ فِيهِ ۚ وَمَا اُخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ
أُوتُوهُ مِنْ ۚ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا ۚ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لِمَا
اُخْتَلَفُوا ۚ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۚ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ ۚ مُسْتَقِيمٍ

(पहले) सब लोग एक ही दीन रखते थे (फिर आपस में झगड़ने लगे तब) खुदा ने नजात से खुश खबरी देने वाले और अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बरों को भेजा और इन पैग़म्बरों के साथ बरहक़ किताब भी नाज़िल की ताकि जिन बातों में लोग झगड़ते थे किताबे खुदा (उसका) फ़ैसला कर दे और फिर अफ़सोस तो ये है कि इस हुक्म से इस्तेलाफ़ किया भी तो उन्हीं लोगों ने जिन को किताब दी गयी थी और वह भी जब उन के पास खुदा के साफ़ एहक़ाम आ चुके उसके बाद और वह भी आपस की शरारत से तब खुदा ने अपनी मेहरबानी से (ख़ालिस) ईमानदारों को वह राहे हक़ दिखा दी जिस में उन लोगों ने इस्तेलाफ़ डाल रखा था और खुदा जिस को चाहे राहे रास्त की हिदायत करता है

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا ۚ الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا ۚ مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ مَسَّتْهُمْ
الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا ۚ حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَعَهُ ۚ مَتَى نَصْرُ
اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ۚ

क्या तुम ये ख्याल करते हो कि बेहश्त में पहुँच ही जाओगे हालाँकि अभी तक तुम्हे अगले ज़माने वालों की सी हालत नहीं पेश आयी कि उन्हें तरह तरह की तक़लीफ़ों (फाक़ा कशी मोहताज़ी) और बीमारी ने घेर लिया था और ज़लज़ले में इस क़दर झिंझोड़े गए कि आखिर (आज़िज़ हो के) पैग़म्बर और ईमान वाले जो उन के साथ थे कहने लगे देखिए खुदा की मदद कब (होती) है देखो (घबराओ नहीं) खुदा की मदद यक़ीनन बहुत करीब है

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ قُلْ مَا أُنْفِقُ مِنْ خَيْرٍ ۖ فَلِلَّذِينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا ۚ مِنْ خَيْرٍ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ ۚ عَلِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग पूछते हैं कि हम खुदा की राह में क्या खर्च करें (तो तुम उन्हें) जवाब दो कि तुम अपनी नेक कमाई से जो कुछ खर्च करो तो (वह तुम्हारे माँ बाप और कराबतदारों और यतीमों और मोहताजों और परदेसियों का हक है और तुम कोई नेक सा काम करो खुदा उसको जरूर जानता है

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ ۚ لَكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا ۚ شَيْئًا ۚ وَهُوَ خَيْرٌ ۚ
لَكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا ۚ شَيْئًا ۚ وَهُوَ شَرٌّ ۚ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

(मुसलमानों) तुम पर जिहाद फर्ज किया गया अगरचे तुम पर शाक़ जरूर है और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ (जिहाद) को नापसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को पसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और खुदा (तो) जानता ही है मगर तुम नहीं जानते हो

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ ۚ فِيهِ ۚ قُلْ قِتَالٌ ۚ فِيهِ كَبِيرٌ ۚ ۚ وَصَدُّ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ ۚ بِهِ ۚ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ ۚ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ
وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا يَزَالُونَ يَقْتُلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنْ
أَسْتَطَعُوا ۚ ۚ وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ ۚ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ ۚ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَلُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग हुरमत वाले महीनों की निस्बत पूछते हैं कि (आया) जिहाद उनमें जायज़ है तो तुम उन्हें जवाब दो कि इन महीनों में जेहाद बड़ा गुनाह है और ये भी याद रहे कि खुदा की राह से रोकना और खुदा से इन्कार और मस्जिदुल हराम (काबा) से रोकना और जो उस के अहल है उनका मस्जिद से निकाल बाहर करना (ये सब) खुदा के नज़दीक इस से भी बढ़कर गुनाह है और फ़ितना परदाज़ी कुशती खून से भी बढ़ कर है और ये कुफ़्रार हमेशा तुम से लड़ते ही चले जाएँगे यहाँ तक कि अगर उन का बस चले तो तुम को तुम्हारे दीन से फिरा दे और तुम में जो शरूस् अपने दीन से फिरा और कुफ़्र की हालत में मर गया तो ऐसों ही का किया कराया सब कुछ दुनिया और आखेरत (दोनों) में अकारत है और यही लोग जहन्नुमी हैं (और) वह उसी में हमेशा रहेंगे

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُو۟لَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और खुदा की राह में हिजरत की और जिहाद किया यही लोग रहमते खुदा के उम्मीदवार हैं और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۚ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ ۚ وَمَنْفَعُ النَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۚ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلِ الْغَفْوُ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग शराब और जुए के बारे में पूछते हैं तो तुम उन से कह दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और कुछ फायदे भी हैं और उन के फायदे से उन का गुनाह बढ़ के है और तुम से लोग पूछते हैं कि खुदा की राह में क्या खर्च करे तुम उनसे कह दो कि जो तुम्हारे ज़रूरत से बचे यूँ खुदा अपने एहकाम तुम से साफ़ साफ़ बयान करता है

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۚ قُلْ إِصْلَاحٌ ۚ لَهُمْ خَيْرٌ ۚ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

ताकि तुम दुनिया और आखिरत (के मामलात) में ग़ौर करो और तुम से लोग यतीमों के बारे में पूछते हैं तुम (उन से) कह दो कि उनकी (इसलाह दुरुस्ती) बेहतर है और अगर तुम उन से मिलजुल कर रहो तो (कुछ हर्ज) नहीं आखिर वह तुम्हारे भाई ही तो हैं और खुदा फ़सादी को ख़ैर ख्वाह से (अलग ख़ूब) जानता है और अगर खुदा चाहता तो तुम को मुसीबत में डाल देता बेशक खुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है

وَلَا تَنْكِحُوا ۚ الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ يُؤْمِنَ ۚ وَلَا مَآءَةً ۚ مُؤْمِنَةً خَيْرٌ ۚ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ۚ وَلَوْ
 أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تَنْكِحُوا ۚ الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ ۚ وَلَعَبْدٌ ۚ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ ۚ مِّنْ
 مُّشْرِكٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُو۟لَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۚ وَاللَّهُ يَدْعُوا ۚ إِلَى الْجَنَّةِ
 وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۚ ۚ وَيُبَيِّنُ ۚ ءَايَتِهِ ۚ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और (मुसलमानों) तुम मुशरिक औरतों से जब तक ईमान न लाएँ निकाह न करो क्योंकि मुशरिका औरत तुम्हें अपने हुस्नो जमाल में कैसी ही अच्छी क्यों न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़रूर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह में न दो और मुशरिक तुम्हें कैसा ही अच्छा क्यों न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़रूर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह में न दो और मुशरिक तुम्हें क्या ही अच्छा क्यों न मालूम हो मगर फिर भी बन्दा मोमिन उनसे ज़रूर अच्छा है ये (मुशरिक मर्द या औरत) लोगों को दोज़ख की तरफ बुलाते हैं और खुदा अपनी इनायत से बेहिश्त और बख़्शिश की तरफ बुलाता है और अपने एहकाम लोगों से साफ साफ बयान करता है ताकि ये लोग चेतें

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۚ قُلْ هُوَ أَذًى ۚ فَاعْتَزِلُوا ۚ النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۚ وَلَا
 تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۚ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ
 يُحِبُّ ۚ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ ۚ الْمُتَطَهِّرِينَ

(ऐ रसूल) तुम से लोग हैज़ के बारे में पूछते हैं तुम उनसे कह दो कि ये गन्दगी और घिन की बीमारी है तो (अय्यामे हैज़) में तुम औरतों से अलग रहो और जब तक वह पाक न हो जाएँ उनके पास न जाओ पस जब वह पाक हो जाएँ तो जिधर से तुम्हें खुदा ने हुक्म दिया है उन के पास जाओ बेशक खुदा तौबा करने वालो और सुथरे लोगों को पसन्द करता है तुम्हारी बीवियाँ (गोया) तुम्हारी खेती हैं

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ ۚ لَّكُمْ فَأْتُوا ۚ حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۚ وَقَدِمُوا ۚ لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا ۚ
 اللَّهَ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّكُمْ مُّلْقَوُهُ ۚ ۚ وَبَشِّرِ ۚ الْمُؤْمِنِينَ

तो तुम अपनी खेती में जिस तरह चाहो आओ और अपनी आइन्दा की भलाई के वास्ते (आमाल साके) पेशगी भेजो और खुदा से डरते रहो और ये भी समझ रखो कि एक दिन तुमको उसके सामने जाना है और ऐ रसूल ईमानदारों को नजात की खुश खबरी दे दो

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

और जिन औरतों को तलाक दी गयी है वह अपने आपको तलाक के बाद तीन हैज के खत्म हो जाने तक निकाह सानी से रोके और अगर वह औरतें खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान लायीं हैं तो उनके लिए जाएज नहीं है कि जो कुछ भी खुदा ने उनके रहम (पेट) में पैदा किया है उसको छिपाएँ और अगर उन के शौहर मेल जोल करना चाहें तो वह (मुदत मजकूरा) में उन के वापस बुला लेने के ज्यादा हकदार हैं और शरीयत मुवाफिक औरतों का (मर्दों पर) वही सब कुछ हक है जो मर्दों का औरतों पर है हाँ अलबत्ता मर्दों को (फ़ज़ीलत में) औरतों पर फौक़ियत ज़रूर है और खुदा ज़बरदस्त हिक़मत वाला है

الطَّلَقُ مَرَّتَانٍ ۚ فَإِمْسَاكٌ ۚ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ ۚ بِإِحْسَنٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَكُمُ أَنْ تَأْخُذُوا ۚ مِمَّا ءَاتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

तलाक रजअई जिसके बाद रुजू हो सकती है दो ही मरतबा है उसके बाद या तो शरीयत के मवाफिक रोक ही लेना चाहिए या हुस्न सुलूक से (तीसरी दफ़ा) बिल्कुल रुख़सत और तुम को ये जायज़ नहीं कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उस में से फिर कुछ वापस लो मगर जब दोनों को इसका खौफ़ हो कि खुदा ने जो हदें मुकर्रर कर दी हैं उन को दोनो मिया बीवी कायम न रख सकेंगे फिर अगर तुम्हे (ऐ मुसलमानो) ये खौफ़ हो कि यह दोनो खुदा की मुकर्रर की हुई हदों पर कायम न रहेंगे तो अगर औरत मर्द को कुछ देकर अपना पीछा छुड़ाए (खुला कराए) तो इसमें उन दोनों पर कुछ गुनाह नहीं है ये खुदा की मुकर्रर की हुई हदें हैं बस उन से आगे न बढ़ो और जो खुदा की मुकर्रर की हुई हदों से आगे बढ़ते हैं वह ही लोग तो ज़ालिम हैं

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ ۚ مِنْ ۚ بَعْدُ حَتَّىٰ تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۚ ۚ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ ۚ يَعْلَمُونَ

फिर अगर तीसरी बार भी औरत को तलाक़ (बाइन) दे तो उसके बाद जब तक दूसरे मर्द से निकाह न कर ले उस के लिए हलाल नहीं हाँ अगर दूसरा शौहर निकाह के बाद उसको तलाक़ दे दे तब अलबत्ता उन मिया बीबी पर बाहम मेल कर लेने में कुछ गुनाह नहीं है अगर उन दोनों को यह गुमान हो कि खुदा हदों को कायम रख सकेंगे और ये खुदा की (मुकरर की हुई) हदें हैं जो समझदार लोगों के वास्ते साफ साफ बयान करता है

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا ۚ لَتَعْتَدُوا ۚ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا ۚ ءَايَتِ اللَّهِ هُزُوءًا ۚ ۚ وَادْكُرُوا ۚ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

और जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो और उनकी मुद्दत पूरी होने को आए तो अच्छे उनवान से उन को रोक लो या हुस्ने सुलूक से बिल्कुल रुखसत ही कर दो और उन्हें तकलीफ पहुँचाने के लिए न रोको ताकि (फिर उन पर) ज्यादाती करने लगो और जो ऐसा करेगा तो यकीनन अपने ही पर जुल्म करेगा और खुदा के एहकाम को कुछ हँसी ठट्ठा न समझो और खुदा ने जो तुम्हें नेअमते दी हैं उन्हें याद करो और जो किताब और अकल की बातें तुम पर नाज़िल की उनसे तुम्हारी नसीहत करता है और खुदा से डरते रहो और समझ रखो कि खुदा हर चीज़ को ज़रूर जानता है

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرْضَوْنَ ۚ ۚ بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ۚ ۚ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ ۚ ۚ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ۚ ذَلِكَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी मुद्दत (इद्दत) पूरी कर लें तो उन्हें अपने शौहरों के साथ निकाह करने से न रोकें जब आपस में दोनों मिया बीबी शरीयत के मुवाफ़िक़ अच्छी तरह मिल जुल जाएँ ये उसी शख्स को नसीहत की जाती है जो तुम में से खुदा और रोजे आखेरत पर ईमान ला चुका हो यही तुम्हारे हक़ में बड़ी पाकीज़ा और सफ़ाई की बात है और उसकी खूबी खुदा खूब जानता है और तुम (वैसा) नहीं जानते हो

﴿ ۱ ﴾ وَالْوَالِدَتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَدَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ﴿ ۲ ﴾ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ﴿ ۳ ﴾
 وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ ﴿ ۴ ﴾ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ﴿ ۵ ﴾ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ﴿ ۶ ﴾ لَا
 تُضَارُّ وَلَدَةٌ ﴿ ۷ ﴾ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ ﴿ ۸ ﴾ لَهُ ﴿ ۹ ﴾ بِوَلَدِهِ ﴿ ۱۰ ﴾ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ ﴿ ۱۱ ﴾ فَإِنْ
 أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ ﴿ ۱۲ ﴾ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ ﴿ ۱۳ ﴾ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ﴿ ۱۴ ﴾ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ
 تَسْتَرْضِعُوهُمَا ﴿ ۱۵ ﴾ أُولَئِكَمُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ﴿ ۱۶ ﴾ وَاتَّقُوا ﴿ ۱۷ ﴾
 اللَّهَ وَأَعْلَمُوا ﴿ ۱۸ ﴾ أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿ ۱۹ ﴾

और (तलाक़ देने के बाद) जो शख्स अपनी औलाद को पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे तो उसकी खातिर से माएँ अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ और जिसका वह लड़का है (बाप) उस पर माओं का खाना कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ लाज़िम है किसी शख्स को ज़हमत नहीं दी जाती मगर उसकी गुन्जाइश भर न माँ का उस के बच्चे की वजह से नुक़सान गवारा किया जाए और न जिस का लड़का है (बाप) उसका (बल्कि दस्तूर के मुताबिक़ दिया जाए) और अगर बाप न हो तो दूध पिलाने का हक़ उसी तरह वारिस पर लाज़िम है फिर अगर दो बरस के क़ब्ल माँ बाप दोनों अपनी मरज़ी और मशवरे से दूध बढ़ाई करना चाहें तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी अन्ना से) दूध पिलवाना चाहो तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं है बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ मुक़र्रर किया है उन के हवाले कर दो और खुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो खुदा ज़रूर देखता है

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ﴿ ۱ ﴾ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ ﴿ ۲ ﴾
 وَعَشْرًا ﴿ ۳ ﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
 بِالْمَعْرُوفِ ﴿ ۴ ﴾ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿ ۵ ﴾

और तुममें से जो लोग बीवियाँ छोड़ के मर जाएँ तो ये औरतें चार महीने दस रोज़ (इद्दा भर) अपने को रोके (और दूसरा निकाह न करें) फिर जब (इद्दे की मुद्दत) पूरी कर ले तो शरीयत के मुताबिक़ जो कुछ अपने हक़ में करें इस बारे में तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस से ख़बरदार है

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ[؟] مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ[؟] عِلْمَ اللَّهِ أَنْكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُوَاْعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا[؟] قَوْلًا[؟] مَعْرُوفًا[؟] وَلَا تَعْزِمُوا[؟] عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ[؟] وَأَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ[؟] وَأَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ[؟]

और अगर तुम (उस खौफ से कि शायद कोई दूसरा निकाह कर ले) उन औरतों से इशारतन निकाह की (कैद इद्दा) खास्तगारी (उम्मीदवारी) करो या अपने दिलों में छिपाए रखो तो उसमें भी कुछ तुम पर इल्जाम नहीं है (क्योंकि) खुदा को मालूम है कि (तुम से सब्र न हो सकेगा और) उन औरतों से निकाह करने का ख्याल आएगा लेकिन चोरी छिपे से निकाह का वायदा न करना मगर ये कि उन से अच्छी बात कह गुज़रों (तो मज़ाएक़ा नहीं) और जब तक मुकर्रर मियाद गुज़र न जाए निकाह का क़सद (इरादा) भी न करना और समझ रखो कि जो कुछ तुम्हारी दिल में है खुदा उस को ज़रूर जानता है तो उस से डरते रहो और (ये भी) जान लो कि खुदा बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا[؟] لَهُنَّ فَرِيضَةٌ[؟] وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرُهُ[؟] وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدَرُهُ[؟] مَتَّعًا[؟] بِالْمَعْرُوفِ[؟] حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ

और अगर तुम ने अपनी बीवियों को हाथ तक न लगाया हो और न महर मुअय्युन किया हो और उसके क़बूल ही तुम उनको तलाक़ दे दो (तो इस में भी) तुम पर कुछ इल्जाम नहीं है हाँ उन औरतों के साथ (दस्तूर के मुताबिक़) मालदार पर अपनी हैसियत के मुआफ़िक़ और ग़रीब पर अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ (कपड़े रुपए वग़ैरह से) कुछ सुलूक करना लाज़िम है नेकी करने वालों पर ये भी एक हक़ है

وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً[؟] فَانْصِفُوا[؟] مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا[؟] الَّذِي بَيْنَهُ[؟] عُقْدَةُ النِّكَاحِ[؟] وَأَنْ تَعْفُوا[؟] أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى[؟] وَلَا تَنْسُوا[؟] الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ[؟] إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

और अगर तुम उन औरतों का मेहर तो मुअय्यन कर चुके हो मगर हाथ लगाने के क़बूल ही तलाक़ दे दो तो उन औरतों को मेहर मुअय्यन का आधा दे दो मगर ये कि ये औरतें खुद माफ़ कर दें या उन का वली जिसके हाथ में उनके निकाह का एख्तेयार हो माफ़ कर दे (तब कुछ नहीं) और अगर तुम ही सारा मेहर बख़्श दो तो परहेज़गारी से बहुत ही करीब है और आपस की बुर्जुगी तो मत भूलो और जो कुछ तुम करते हो खुदा ज़रूर देख रहा है

حَفِظُوا ۚ عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا ۚ لِلَّهِ قُنْتَيْنَ

और (मुसलमानों) तुम तमाम नमाज़ों की और खुसूसन बीच वाली नमाज़ सुबह या ज़ोहर या अस्त्र की पाबन्दी करो और खास खुदा ही वास्ते नमाज़ में कुनूत पढ़ने वाले हो कर खड़े हो फिर अगर तुम खौफ की हालत में हो

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا ۚ اللَّهُ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا ۚ تَعْلَمُونَ

और पूरी नमाज़ न पढ़ सको तो सवार या पैदल जिस तरह बन पड़े पढ़ लो फिर जब तुम्हें इत्मेनान हो तो जिस तरह खुदा ने तुम्हें (अपने रसूल की मआरफत इन बातों को सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۚ وَصِيَّةً ۚ لِأَزْوَاجِهِمْ مَّتَعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

उसी तरह खुदा को याद करो और तुम में से जो लोग अपनी बीवियों को छोड़ कर मर जाएँ उन पर अपनी बीबियों के हक्क में साल भर तक के नान व नुफ्के (रोटी कपड़ा) और (घर से) न निकलने की वसीयत करनी (लाज़िम) है पस अगर औरतें खुद निकल खड़ी हो तो जायज़ बातों (निकाह वगैरह) से कुछ अपने हक्क में करे उसका तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है और खुदा हर ये पर ग़ालिब और हिक़मत वाला है

وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَّعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ

और जिन औरतों को ताअय्युन मेहर और हाथ लगाए बगैर तलाक़ दे दी जाए उनके साथ जोड़े रुपए वगैरह से सुलूक करना लाज़िम है

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَتِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

(ये भी) परहेज़गारों पर एक हक्क है उसी तरह खुदा तुम लोगों की हिदायत के वास्ते अपने एहक़ाम साफ़ साफ़ बयान फरमाता है

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا ﴾ مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ﴿ ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ﴾ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

ताकि तुम समझो (ऐ रसूल) क्या तुम ने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जो मौत के डर के मारे अपने घरों से निकल भागे और वह हज़ारों आदमी थे तो खुदा ने उन से फरमाया कि सब के सब मर जाओ (और वह मर गए) फिर खुदा न उन्हें जिन्दा किया बेशक खुदा लोगों पर बड़ा मेहरबान है मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं करते

وَقَاتِلُوا ﴿ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَعْلَمُوا ﴾ أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿

और मुसलमानों खुदा की राह में जिहाद करो और जान रखो कि खुदा ज़रूर सब कुछ सुनता (और) जानता है

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ﴿ فَيُضِعُّهُ ﴾ لَهُ ﴿ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ﴾ ﴿ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ ﴿ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

है कोई जो खुदा को कर्ज़ ए हुस्ना दे ताकि खुदा उसके माल को इस के लिए कई गुना बढ़ा दे और खुदा ही तंगदस्त करता है और वही कशायश देता है और उसकी तरफ सब के सब लौटा दिये जाओगे

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنْ ﴾ بَعْدَ مُوسَى إِذْ قَالُوا ﴿ لِنَبِيِّ ﴾ لَهُمْ أُبْعَثْ لَنَا مَلِكًا ﴿ نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ﴾ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ﴿ قَالُوا ﴿ وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَاءِنَا ﴿ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا ﴿ إِلَّا قَلِيلًا ﴿ مِّنْهُمْ ﴾ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ﴿ بِالظَّالِمِينَ

(ऐ रसूल) क्या तुमने मूसा के बाद बनी इसराइल के सरदारों की हालत पर नज़र नहीं की जब उन्होंने अपने नबी (शमूयेल) से कहा कि हमारे वास्ते एक बादशाह मुकर्रर कीजिए ताकि हम राहे खुदा में जिहाद करें (पैगम्बर ने) फ़रमाया कहीं ऐसा तो न हो कि जब तुम पर जिहाद वाजिब किया जाए तो तुम न लड़ो कहने लगे जब हम अपने घरों और अपने बाल बच्चों से निकाले जा चुके तो फिर हमें कौन सा उज्र बाक़ी है कि हम खुदा की राह में जिहाद न करें फिर जब उन पर जिहाद वाजिब किया गया तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा सब के सब ने लड़ने से मुँह फेरा और खुदा तो ज़ालिमों को खूब जानता है

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۖ ا قَالُوا ۖ أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً ۖ مِّنَ الْمَالِ ۖ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ ۖ بَسْطَةً ۖ فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ ۖ مَن يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ

और उनके नबी ने उनसे कहा कि बेशक खुदा ने तुम्हारी दरखास्त के (मुताबिक तालूत को तुम्हारा बादशाह मुकर्रर किया (तब) कहने लगे उस की हुकूमत हम पर क्यों कर हो सकती है हालांकि सल्तनत के हकदार उससे ज्यादा तो हम हैं क्योंकि उसे तो माल के एतबार से भी फ़ारगुल बाली (खुशहाली) तक नसीब नहीं (नबी ने) कहा खुदा ने उसे तुम पर फज़ीलत दी है और माल में न सही मगर इल्म और जिस्म का फैलाव तो उस का खुदा ने ज्यादा फरमाया है और खुदा अपना मुल्क जिसे चाहें दे और खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और वाकिफ़कार है

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ ۖ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ ۖ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ ۖ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ

और उन के नबी ने उनसे ये भी कहा इस के (मुनाजानिब अल्लाह) बादशाह होने की ये पहचान है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जाएगा जिसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तसकीन दे चीजें और उन तब्बुरक्रात से बचा खुचा होगा जो मूसा और हारुन की औलाद यादगार छोड़ गयी है और उस सन्दूक को फरिश्ते उठाए होंगे अगर तुम ईमान रखते हो तो बेशक उसमें तुम्हारे वास्ते पूरी निशानी है

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ ۖ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ ۖ مِنِّي إِلَّا مَنْ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۗ بِيَدِهِ ۚ ۚ فَشَرِبُوا ۖ مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ ۖ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۖ مَعَهُ ۖ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْكُوا ۖ اللَّهُ كَمْ مِّن فِتْنَةٍ ۚ قَلِيلَةٌ غَلَبَتْ فِئَةً ۚ كَثِيرَةً ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ

फिर जब तालूत लश्कर समेत (शहर ऐलिया से) खाना हुआ तो अपने साथियों से कहा देखो आगे एक नहर मिलेगी इस से यकीनन खुदा तुम्हारे सब्र की आजमाइश करेगा पस जो शख्स उस का पानी पीयेगा मुझे (कुछ वास्ता) नहीं रखता और जो उस को नहीं चखेगा वह बेशक मुझ से होगा मगर हाँ जो अपने हाथ से एक (आधा चुल्लू भर के पी) ले तो कुछ हर्ज नहीं पस उन लोगों ने न माना और चन्द आदमियों के सिवा सब ने उस का पानी पिया खैर जब तालूत और जो मोमिनीन उन के साथ थे नहर से पास हो गए तो (खास मोमिनों के सिवा) सब के सब कहने लगे कि हम में तो आज भी जालूत और उसकी फौज से लड़ने की सकत नहीं मगर वह लोग जिनको यकीन है कि एक दिन खुदा को मुँह दिखाना है बेधड़क बोल उठे कि ऐसा बहुत हुआ कि खुदा के हुक्म से छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर गालिब आ गयी है और खुदा सब्र करने वालों का साथी है

وَلَمَّا بَرَزُوا ۖ لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا ۚ وَثَبَّتْ أقدامَنَا وَأَنْصَرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

(गरज) जब ये लोग जालूत और उसकी फौज के मुकाबले को निकले तो दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार हमें कामिल सब्र अता फरमा और मैदाने जंग में हमारे कदम जमाए रख और हमें काफिरों पर फतेह इनायत कर

فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ ۖ دُجَالُوتَ ۖ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ ۖ مِمَّا يَشَاءُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۚ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ

फिर तो उन लोगों ने खुदा के हुक्म से दुश्मनों को शिकस्त दी और दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया और खुदा ने उनको सल्तनत व तदबीर तम्हुन अता की और इल्म व हुनर जो चाहा उन्हें गोया घोल के पिला दिया और अगर खुदा बाज़ लोगों के ज़रिए से बाज़ का दफाए (शर) न करता तो तमाम रुप ज़मीन पर फ़साद फैल जाता मगर खुदा तो सारे जहाँ के लोगों पर फज़ल व रहम करता है

تِلْكَ ءَايَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

ऐ रसूल ये खुदा की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम को ठीक ठीक पढ़के सुनाते हैं और बेशक तुम ज़रूर रसूलों में से हो